## 高級繙譯指南

作文繙譯捷訣

#### THE TRANSLATOR'S GUIDE

A PRACTICAL HANDBOOK OF TRANSLATION

AND COMPOSITION

#### ALL RIGHTS RESERVED

#### THE TRANSLATOR'S GUIDE

A PRACTICAL HANDBOOK OF TRANSLATION

AND COMPOSITION

Frice \$.60

Postage extra

Fifth Edition May, 1935

Author & Compiler:

WANTZ T. YEN

THE WORLD BOOK CO., LTD.

PRINTERS AND PUBLISHERS

WORKS: 5 Dalny Road, Hongkew, Shanghai

MAIN STORE: Foochow Road, Shanghai

BRANCHES: Peking, Tientsin, Pacting, Singtai, Suiyuan, Fengtien,
Kirin, Taiyuan, Tsinan, Chefoo, Wuchang, Hankow, Ichang,
Changsha, Changteh, Hengchow, Nanchang, Anchin, Hofei,
Wuhu, Hangchow, Ningpo, Kashing, Wenchow, Lanchi, Nanking,
Hsuchow, Foochow, Canton, Swatow, Chungking, Wuchow.

版權所有翻印必究

#### 高級繙譯指南

定傾法縣 畫千畫百佐谷二

五版 民國廿四年五月

編著者: 嚴 畹 滋

印刷兼發行者:

世界書局

印刷 所: 上海虹目大連灣路五號

總發行所: 上海四馬路中市

分 發 行 所: 北京 天津 保定 邢台 級遺 奉天 吉林 太原 濟南 烟台 武昌 漢口 宜昌 長沙 常德 衡州 南昌 安慶 合肥 蕪湖 杭州 甯波 嘉興 温州 關谿 南京 徐州 福州 廣州 油頭 重慶 梧州

# PART TWO SPECIMENS OF TRANSLATION

第二編 繙譯示範

## PART TWO: SPECIMENS OF TRANSLATION

#### 第二編 繙譯示範

#### CHAPTER I. CHINESE LITERATURE

|     |            |               |     |    | 1        | 那        |     | 草          |     | tti   | 國     | 文   | 學     |     |     |     |     |
|-----|------------|---------------|-----|----|----------|----------|-----|------------|-----|-------|-------|-----|-------|-----|-----|-----|-----|
|     |            |               |     |    |          |          |     |            |     |       |       |     |       |     |     | P   | ACE |
| 擇   | 老          | 干             | 制   | 惑  | Ţį.      | • • •    | ••• | •••        | ••• | •••   | •••   | ••• | •••   | ••• | ••• | ••• | 1   |
| 摘   | 譯          | 莊             | -J- | 秋  | 水        | 鴛        | ••• | •••        | ••• | • • • |       |     |       | ••• | ••• | ••• | 2   |
| 摘   | 譯          | 75            | 子   | 貴  | Ř        | 篇        | ••• | •••        | ••• |       |       | ••• | •••   | ••• | ••• | ••• | 3   |
| 摘   | 霹          | 史             | 部   | 陳  | 港        | Ħ        | 家   | •••        | ••• | • • • |       |     | •••   | ••• | ••• | ••• | 4   |
| 歐   | 陽          | 修             | 奥   | 黄  | 校        | <b>:</b> | 論   | 文 章        | 書   |       |       |     |       | ••• | ••• | ••• | 6   |
| 摘   | <b>P</b>   | 老             | 穫   | 遊  | 38       |          |     | •••        | •   |       |       |     |       | ••• |     | ••• | 8   |
| 摘   | 譯          | 水             | 滸   | (梁 | <u> </u> | 1 11     | 9 好 | 漢力         | 从法  | 楊)    | •••   |     |       |     | ••• | ••• | 11  |
|     | C          | $\mathbf{H}A$ | AP. | ГE | R        | H.       |     | HOI<br>PAR |     |       |       |     | ND    | US  | SEF | UŁ  |     |
|     |            |               |     | 第  | _        |          | 章   |            |     |       |       |     | 蓍     | 華   |     |     |     |
| sts | 1.82       | <b>.</b>      | *   | 命· |          | •••      |     |            |     |       |       |     |       | •   |     |     | 13  |
| •   |            |               | •   |    |          |          |     |            |     | •••   | •••   | ••• | •••   | ••• | ••• | ••• |     |
| 93  | 自          | <i>1</i> 03.  | ••  |    | ••       | •••      | ••• | •••        | ••• | • • • | •••   | ••• | •••   | *** | ••• | *** | 15  |
| 勿   | 自          | 輕             | ••• |    | ••       | •••      | ••• | •••        | ••• | •••   | •••   | ••• | • • • | ••• | ••• | ••• | 16  |
| 人   | 生          | 觀             | ••• |    | ••       | •••      | ••• | •••        | ••• | •••   | •••   | ••• | •••   | ••• | ••• | ••• | 18  |
| 成   | 功          | Ż             | 횾   | 諦· | ••       | •••      | ••• |            | ••• | •••   | •••   | ••• | •••   | ••• | ••• | ••• | 19  |
| 4   | 各          | Ż             | 弊   | •  | ••       | •••      | ••• | •••        |     | •••   | •••   | ••• | •••   | ••• | ••• | ••• | 20  |
| 我   | 個          | 人             | 對   | 於  | 文        | \$       | 之》  | 1 解        | ••• |       | •••   |     |       |     | ••• | ••• | 21  |
| 新   | 軟          | 育             | Ż   | 特  | 點        |          | ••• |            |     | •••   | • • • |     | •••   |     | ••• | ••• | 23  |
| *   | <b>E</b> Z | 46            | *   | 4  | æε       | W 1-     |     |            |     |       |       |     |       |     |     |     | 0.4 |

|          |                                               |    |         |                 |             |           |    |     |     |       |     |                     |     |       |       |               |       | I   | PAGE |
|----------|-----------------------------------------------|----|---------|-----------------|-------------|-----------|----|-----|-----|-------|-----|---------------------|-----|-------|-------|---------------|-------|-----|------|
|          | _                                             |    | _       |                 |             |           |    | ••• | ••• | •     | ••  | •••                 | ••• | • ••  | • ••• | •••           | • ••• | ••• |      |
|          |                                               |    |         |                 | •••         |           |    | ••• | ••• | •     | ••  | •••                 | ••• | • ••  | • ••• | • • •         | • ••• | ••• |      |
|          |                                               |    |         |                 | •••         |           |    |     | ••• | •     | ••  | •••                 | ••• | • ••  | •     | •••           | • ••• | ••• |      |
|          |                                               |    |         |                 | 1 1         |           |    | ••• | ••• | •     | ••  | •••                 | ••• | • ••  | • ••• | •••           | •••   | •-• |      |
| 4        | 業                                             | 後  | 精       | Į į             | <b>1</b> 53 | <b>.</b>  | •  | ••• | ••• | •     | ••  | •••                 | ••• | • • • | • ••• | •••           | •••   | ••• | 34   |
|          |                                               | C  | H 4     | P               | rЕ          | R.        | m  | ſ   | SI  | ec:1  | R.F | יר!<br><i>א</i> יר! | RI  | AT.   | WI    | 2. <b>T</b> T | ING   | g   |      |
|          | CHAPTER III. SECRETARIAL WRITINGS<br>第三章 公文宣言 |    |         |                 |             |           |    |     |     |       |     |                     |     |       |       |               |       |     |      |
|          |                                               |    |         |                 | j           | <b>41</b> |    | :   | Τŗ  |       | 1   | 7                   | 文   | 育     | 言     |               |       |     |      |
| 試        | R                                             | 政  | 府       | Ż               | 宜           | 雷         |    | ••• |     | •     |     | •••                 | ••• | •••   |       |               | •••   | ••• | 37   |
| 外        | 交                                             | 部  | Ę       | : 11i           | 朝           | 樞         | 對  | 月   | 'n  | 目     |     | •••                 |     | •••   | •••   | •••           | •••   |     | 42   |
| Ŀ        | 妆                                             | ф  | <b></b> | 1!              | 111         | 公         | f  | 及   | 各   | 大     | 4   | 同                   | 一志  | 徻     | 爲收    | 回             | 會習    | F 公 |      |
|          |                                               | 堂  | 疳       | Z               | Ī           | a         | Į, | :   | ••• |       |     | •••                 |     | •••   | •••   | •••           | •••   |     | 47   |
| 偛        | 外                                             | 交  | 部       | J.              | 致           | 英         | 公  | 使   | 抗   | 臨     | 女   |                     |     | •••   | •••   |               | •••   | ••• | 55   |
| 民        | 例                                             |    | Ŧi.     | 31:             | -   -       |           | 月  | -1- | 六   | 11    | 北   | 京                   | 外   | 交:    | 部駁    | 覆             | 比值    | き照  |      |
|          |                                               | 會  |         |                 |             |           |    |     |     |       |     |                     |     |       |       |               | •••   |     | 57   |
| 李        | 鸿                                             | 章  | 致       | () <sup>1</sup> | 膝           | 萨         | 奥  | 文   | 函   | •••   |     | •••                 | ••• | •••   | •••   | •••           | •••   |     | 61   |
| 民        | Ы                                             | 六  | 车       | 九               | Н           |           | +  |     | П   | 北     | 京   | 外                   | 交   | 部     | 路 張   | 動             | 車 致   | 和   |      |
|          |                                               |    | 公       | 使               | 節           | 畧         |    | ••  | ••• | • • • |     | •••                 | ••• | •••   | •••   | •••           |       | ••• | 63   |
| Ŧi.      | Ħ                                             | 案  | 總       | ili             | 會           | 答         | 復  | 英   | 脳   | 公     | 實   | 文                   |     | •••   | •••   | •••           | •••   | ••• | 65   |
| ~~       |                                               |    |         | -               |             |           |    |     |     |       |     |                     |     |       |       |               |       |     |      |
| Ci       | ΗA                                            | PΊ | EJ      | 3               | 17          | •         | R  | EC  | JU. | LA    | TI  | .01                 | VS  | AN    | ID    | CO            | NTR   | AC  | TS   |
| 第四章 章程契約 |                                               |    |         |                 |             |           |    |     |     |       |     |                     |     |       |       |               |       |     |      |
|          |                                               |    |         |                 |             |           |    |     |     |       |     |                     |     | -     |       |               |       |     |      |
|          |                                               |    |         |                 |             |           |    |     |     |       |     | 規                   | 則   | •••   | •••   | •••           | •••   | ••• | 67   |
|          |                                               |    |         |                 |             |           |    |     | 育   |       |     |                     | ••• | •••   | •••   | •••           | •••   | ••• | 75   |
|          |                                               |    |         |                 |             |           |    |     |     |       |     |                     |     | •••   | •••   | •••           | •••   | ••• | 79   |
|          |                                               |    |         |                 |             |           |    |     |     |       |     |                     | 欵   | •••   | •••   | •••           | •••   | ••• | 84   |
| 4        | 通                                             | 附  | 業       | 交               | 80          | 合         | 同  | 格   | 式   | •••   | ••  | • •                 | ••• | •••   | • • • | •••           | •••   | ••• | 89   |

#### CHAPTER I. CHINESE LITERATURE

#### 第一章 中國文學

#### 〔譯老子制感章〕

民不畏死.奈何以死懼之.若使民常畏死.而為 奇者.吾得執而殺之.執敢.常有司殺者殺.夫代司殺 者殺.是謂代大匠斵.夫代大匠斵者.希有不傷其手 矣.

#### A PASSAGE FROM "LAO TSE"

What is the use of threatening the people with death when they are indifferent to it? Once the people are made to find life so enjoyable that they entertain a habitual fear of death, will they not desist from endangering humanity by crooked doings when they know they are facing the prospect of being apprehended and put to the sword?

The one Being qualified to inflict the scourge of death on mankind is the Supreme Ruler of the universe. For any one to arrogate to himself this function of the Supreme Ruler is to act like a man knowing nothing of carpentry who undertakes a task reserved for the master craftsman. Will the man not, through his rashness, have his hand injured the moment he begins to wield the chisel?

idio di mala per di internationale di mala di

#### [摘譯莊子秋水篇]

莊子釣於濮水.楚王使大夫二人往先焉.曰願 以境內累矣.莊子持竿不顧曰.吾問楚有神龜.死已 三千歲矣.王巾笥而藏之廟堂之上.此龜者.寧其死 爲留骨而貴乎.寧其生而曳尾於塗中乎.二大夫曰. 寧生而曳尾於塗中.莊子曰.往矣.吾將曳尾於塗中.

#### A PASSAGE FROM "CHUANG TZE"

Chuang Tze sat angling on the bank of the river Po. There came up to him two officials of the court of Ch'u with a message from their prince. "His Highness," said they, "desires to leave in your charge the administration of the state."

To this the philosopher gave no heed. Without even laying aside his fishing rod, he said: "I have heard that in Ch'u there is a sacred tortoise which has been dead for three thousand years, and which the prince keeps enshrined in the temple. Would this tortoise choose to be dead and have its remains held sacred or to be alive and wag its tail in the mire?"

"It would choose to be alive," echoed the two officials, "and wag its tail in the mire."

"Begone!" said Chuang Tze, "Why should I not wag my tail in the mire?"

#### 〔摘譯墨子貴義篇〕

子墨子曰.萬事莫貴於義.今謂人曰.予子冠履. 而斷子之手足.子為之乎.必不為.何故.則冠履不若 手足之貴也.又曰.予子天下而殺子之身.子為之乎. 必不為.何故.則天下不若身之貴也.爭一言以相殺. 是貴義於其身也.故曰.萬事莫貴於義也.

#### A PASSAGE FROM "MÊ TZE"

Righteousness should be exalted above all things. Supposing you should make the following proposition to a man: "Will you agree to have your limbs chopped off in exchange for the gift of a hat and a pair of shoes?" He would not entertain such an offer for even one moment. Why? Because to him his limbs are far more precious than hats and shoes. Again, if you were to make another proposition in these words: "You shall hold imperial sway over a vast empire, but at the same time you have to give up your life. Will you accept the offer?" Certainly the answer would be "No," because life is far more important than the possession of an empire.

We find, however, that people often make nothing of risking their lives in duels or quarrels over controversies when they claim that they are in the right—this proves that righteousness is cherished more dearly than life itself. It is, therefore, quite obvious that "righteousness should be exalted above all things."

陳勝王凡六月.

and Arthur

4

既為王王陳.其故人嘗與備耕者聞之.之陳.扣宮門曰.吾欲見涉.宮門令欲轉之.自辨數.乃置.不肯為通.陳王出.遮道而呼涉.陳王聞之.乃召見.載與俱歸.入宮.見殿屋帷帳.客曰.夥蹟.涉之為王沈沈者.楚人謂多為夥.故天下傳之.夥涉為王.由陳涉始.

客出入愈益發舒.言陳王故情.或說陳王曰.客 恩無知.顯妄言輕威.陳王斬之.諸陳王故人皆自引 去.由是無親陳王者.

#### CHEN SHENG

Chen Sheng held sway for a period of six months.

Once (after he had proclaimed himself prince of Chen) there arrived at the palace an old friend of his—a yokemate in his days of drudgery and discontent, who had travelled to Chen on hearing the news of his marvellous success. The visitor said, as he knocked at the gate of the palace, that he wanted to see his pal, Chen Sheh [for this was the prince's name among his pals]. The captain of the palace guards was about to take the intruder into custoday when the latter gave an explanation satisfactory enough to induce that functionary to leave him alone. He was, however, not ready to bring the visitor into the presence of his lord.

THE WILLIAM STREET, WAS ASSESSED.

But an opportunity offered, for His Highness had occasion to come out of the palace. "Hey, Sheh, my pal!" shouted the man, placing himself in the way of the cortége. This attracted the attention of the prince, who granted him an audience and brought him to the palace in his own vehicle.

Here the rustic feasted his eyes on the palatial grandeur—with such an endless display of halls, curtains and awnings. "Ho—eh [meaning: Ever So Much]! he ejaculated in bewilderment; as a prince, my Sheh, you are so grand and inaccessible."

Ho was the dialectal variation of "much", as uttered by the natives of Tso; hence it became known far and wide that prince Chen Sheng was enjoying a privilege which no other ruler had ever enjoyed—that of being addressed as "My Sheh!" and applauded with "Ho—eh!"

As time went on, the prince's guest of honor moved about with increasing self-importance, so much so that he began to talk indiscreetly about the former life of his pal.

Then some one warned Prince Chen Sheng that the bable of the silly guest would seriously affect the prestige of His Highness. The prince was convinced and the rustic decapitated. Hereupon all those who claimed old acquaintance with the prince began to quit the palace, and finally the prince lost every loyal servant.

#### 歐陽修與黃校書論文章書

修順首啓、蒙問及邱舍人所示雜文十篇.竊嘗 覽之、驚嘆不已.其毀譽等數短篇.尤爲篇論.然觀其 用意.在於策論.此古人之所難工.是以不能無小脏 其救擊之說甚詳.而革擊未之能至.見其擊而融其 所以革之者.才識雜通.然後其文博辨深切.中於時 病而不爲空言.蓋見其擊必見其所以擊之因.若賈 生論秦之失而推古養太子之禮.此可謂知其本矣. 然近世應科目文其不可禦矣.文章緊乎治亂之道. 未易談.况乎愚昧.惡能當此.愧畏愧畏.修謹白.

### OU-YANG HSIU'S LETTER TO HIS FRIEND, DISCUSSING ESSAY WRITING

In reply to your inquiries I am very much pleased to say that I have carefully read the ten essays by Secretary Chou. They have filled me with admiration. The short essays on Eulogies and Censure are especially fine specimens of sound argument. On the whole, however, his essays are an attempt to set forth proposals on political and social problems. Essays of this kind proved a stumbling-block to even famous writers of the past, and Secretary Chou is no exception. We find in his writings a thorough discussion of remedial measures for the evils that tend to endanger society and the state, but the question of uprooting these evils once for all has not been fully treated.

It rests with a man of learning and experience to know how evils can be radically removed. It is from this standpoint that the characteristic features of farsightedness and erudition prove to enliven the works of an ideal essayist, making them free from empty words and practically valuable as effective remedies.

No one can thoroughly deal with an evil unless he can see the factors by which the evil is produced. For instance, in his treatise on the fall of the Empire of Tsin, Chia Yih referred to the ancient system of bringing up a prince. This was striking the nail on the head. But I have looked in vain for essays of this type when I pore over those written by modern contestants at the competitive literary examinations. It requires intensive study to develop the art of writing essays of a practical value. Endeavor to attain this end, and your writings will be unrivalled in point of elegance and force.

It is no easy thing to criticise literature, which does much toward the shaping of a nation's destiny. And when the critic is an ignorant man like me, is it not audacious on his part to offer any criticism at all?

Alleman Separati Aviations

#### 〔摘譯老殘遊記〕

觀着三人便將帆葉柚滿類刻便與大船相並 舊工將當子鈎住大船.三人便跳將上去.走至舵樓 底下.深深唱了一個赔.便將自己的向盤及紀限儀 器等.取出呈上.舵工看見.到也和氣.便問此物怎樣 用法.有何益處.

能知遺一陣槽壞.滿船的人.都為之髮動.就是 那演說的英雜豪傑.也在那裏喊道.這是賣船的漢 奸.快殺快殺.船主舵工聽了.俱循豫不定.

內中有一個舵工是船主的权父.說道你三位來意甚善.只是衆怒難犯.趕快去罷.三人垂淚.連忙 個了小船.那知大船上人.餘怒未息.看三人下了小船.忙用被浪打碎的斷椿破板.打下船去.

你想一隻小漁船.怎禁得幾百個人用力亂砸。 質測之間.將那漁船打得粉碎.看着沉下海中去了。 未知三人性命如何.且聽下囘分解.

#### A PASSAGE FROM "THE TRAVELS OF LAO TSAN"

In the course of the conversation, the three men carried a press of sail, and in an instant they were close to the large vessel. The oarsmen held firmly to the vessel by means of their hooks, and the visiting party leaped on board. They repaired to a place under the bridge, made a respectful salutation, and after producing the compass and sextant which they brought with them, offered them as presents. On seeing these instruments the rudder-men showed signs of appreciation. They wished to know the directions for using the instruments and the advantages to be derived from them.

While the discussion was going on, the low class sailors, contrary to expectations, suddenly broke into an uproar, exclaiming: "Captain! Captain! Don't under any consideration be deceived by these men. They are using a foreign compass, and they are spies sent by 'foreign devils.' They are followers of a foreign religion. They have sold our big vessel to 'foreign devils,' and that is why they have got hold of the compass. We request you, Captain, to have these three men tied up and killed right away. This will save us from all future troubles. If you go on talking with them, and, what is still worse, if you follow their advice and use their compass, they will take it for granted that you give assent to the bargain, and the 'foreign devils' will soon come along to seize our ship."

This uproar created quite a sensation on board, and by this time the hero-orator, too, shouted: "These men are simply traitors to China. Go and kill them at once." The captain and rudder-men, hearing these provocative words, were nonplused.

One of the rudder-men, who was an uncle of the captain, said: "Gentlemen, we understand the goodwill by which your visit was actuated. But it is unwise to brave the anger of a multitude. You had better quit in haste." The three visitors left the vessel and returned to their little boat, not without tears. The men on the large vessel, however, remained in a frenzy of indignation, and as soon as they saw that the three men had reembarked in the fishing boat, they seized the planks that were broken loose by the reckless waves and threw them at the boat.

Dear reader, just imagine the helpless state of the small boat—how could it stand the attack of several hundred men who vied with each other in hurling such bulky missiles on it? In a moment the fishing boat was shattered to pieces. In the next chapter we shall disclose the result of this tragedy, and let our readers know whether or not the trio could survive this peril.

#### [摘譯水滸]

#### (梁山泊好漠 級法楊)

## A PASSAGE FROM "SHUI HU" (THE RESCUE PARTY)

Shortly afterwards the crowd that thronged the execution ground had to make room for the onrush of a messenger who came in hot haste, crying: "It is noon now." The officer in charge of the execution said: "Report as soon as the execution is over." The backswordsmen and clubmen of the execution squad began to remove the cangue; and the executioners, sword in hand, were ready for action—when in the twinkling of an eye one of the travellers

Kalendar Communication Communication

who were waiting on the carts produced a small brass gong hidden on his person. No sooner was the order for execution announced than a few strokes of the small gong drove the rescue party to activity. They rushed forward from their various posts.

Every minute counted. From the two-storied team house at the cross-road there leaped down a tiger-like, naked, dark-skinned giant, who was wielding two axes. He yelled, and his stentorian yell rent the air as if there had come a sudden peal of thunder. With one stroke of the axes he knocked down on the spot the two executioners assigned to the fatal job. He was now rushing along to try his axe on the officer in charge of the execution. The soldiery made an effort to attack the giant with their spears, but how could they have the ghost of a chance to succeed? All that was left for them to do was to escort Prefect Tsai (who was the officer in charge of the execution) in his hasty flight to a place of safety.